150 वीं जयंती
डॉ. हरी सिंह गौर

ये है बुन्देलखण्ड

भाग- एक

संपादक
लक्ष्मी पाण्डेय

परामर्श
सुरेश आचार्य

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा सम्पादक/सम्पादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN 978-93-89341-77-5

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 900 रुपये

आवरण

असरार अहमद, सागर

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

अनुक्रम

5	*डॉ. सुरेश आचार्य*	यह ग़ौर बब्बा के प्रति श्रद्धांजलि है...
11	*लक्ष्मी पाण्डेय*	सम्पादकीय

'अ' : सागर-दमोह

27	*डॉ. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव*	सागर के संस्थापक : गोविन्द बल्लाल पन्त एवं विसाजी गोविन्द चान्दोरकर
31	*प्रो. विवेकदत्त झा*	सागर जिले का साँस्कृतिक इतिहास
44	*डॉ. प्रदीप शुक्ल*	सागर क्षेत्र के शैलचित्र
57	*प्रो. पुरुषोत्तम सोनी*	सागर नगर की भू-आकृतियाँ
65	*मणीकान्त चौबे 'बेलिहाज'*	सागर में हिन्दू आस्था के प्रतीक : प्राचीन मन्दिर
77	*डॉ. श्याम मनोहर पचौरी*	देवरी तहसील के प्रमुख धार्मिक तथा पर्यटन स्थल
81	*डॉ. श्याम मनोहर पचौरी*	बण्डा तथा रहली के प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटन स्थल
95	*डॉ. नागेश दुबे*	सागर के अतीत की पहचान : गढ़पहरा
101	*डॉ. नागेश दुबे*	साँस्कृतिक धरातल पर एरण
108	*डॉ. पंकज तिवारी*	एक सपना जो साकार हुआ
117	*कपिल बैसाखिया*	सागर शहर में इन्द्रधनुषी आभामंडल निर्मित करतीं संस्थाएँ
129	*निशा जैन*	बीना : एक समृद्ध नगर
145	*डॉ. किरण जैन*	सागर जिला और उद्योग-धन्धे
148	*लक्ष्मी पाण्डेय*	*शास्त्रीय नृत्य के गुरु : पंडित प्रेमनारायण गुरु*
151	*नरेन्द्र दुबे*	इतिहास के पन्नों में दमोह जिला
161	*डॉ. रमेश चन्द्र खरे*	दमोह जिले के साहित्यकार
168	*डॉ. नाथूराम राठौर*	दमोह जिला : पत्रकारिता के पृष्ठ
172	*ओजेन्द्र तिवारी*	दमोह शहर के प्रमुख मन्दिर
178	*डॉ. संजय बाबू सोनी*	दमोह जिले के प्राचीन वास्तुशिल्प में मठ

साँस्कृतिक धरातल पर एरण

प्रो नागेश दुबे

साँची के पश्चात् कला व प्रतिमाओं की विशालता, प्रारम्भिक गुप्तकालीन मन्दिरों व प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण दूसरा महत्वपूर्ण स्थान एरण है। मध्यप्रदेश के सागर जिले की बीना तहसील में साँस्कृतिक एवं पुरातात्विक, सम्पदा से परिपूर्ण पुरास्थल 'एरण' जिला मुख्यालय से 77 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम दिशा में बीना नदी के तट पर स्थित है।[1] एरण, साँची से लगभग 22 किलोमीटर व बीना तहसील मुख्यालय से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।[2] एरण ने अनेक संस्कृतियों व सभ्यताओं के उत्थान व पतन का काल देखा है। इसकी जानकारी हमें यहाँ से प्राप्त अनेक पुरावशेषों से होती है। एरण से प्राप्त दूसरी व प्रथम शताब्दी ई.पू. में जनपदीय ताम्रमुद्राओं पर इस नगर का तत्कालीन नाम 'एरिकिण', 'एरकण्य' अभिलिखित है। गुप्तकालीन अभिलेखों में भी नगर की यही संज्ञा मिलती है।[3] जीवनदायिनी बीना नदी अर्द्धचन्द्राकर रूप में प्रवाहित होती हुई एरण ग्राम को तीन ओर से सुरक्षा प्रदान करती है। चौथी ओर दक्षिण दिशा में लगभग 1750 ई.पू. में ताम्रपाषाणकालीन विशाल सुरक्षा प्राचीर व खाई का निर्माण किया गया था।[4] एरण की भौगोलिक स्थिति को दृष्टि में रखते हुए यहाँ नवपाषाण, कायथा और ताम्रपाषाण संस्कृति (मालवा संस्कृति) के निर्माताओं ने इस सुरक्षित स्थल को निवास का केन्द्र बनाया। परवर्तीकाल में मौर्यों, शुंगों, सातवाहनों, शकों, नागों, गुप्तों, हूणों, गुर्जर-प्रतिहारों, परमारों, चन्देलों व कल्चुरियों तथा उत्तर मध्यकाल में क्षेत्रीय दांगी शासकों, सल्तनतकालीन व मुगलकालीन शासकों का भी एरण पर आधिपत्य रहा।

ताम्रपाषाणयुगीन, शक, नाग और गुप्तकालीन इतिहास के पुनर्निर्माण में एरण की विशिष्ट भूमिका रही है।[5] 1838 ई. में भारत के प्रसिद्ध पुरातत्वविद् टी.एस. बर्ट ने एरण की सर्वप्रथम खोज की। उन्हीं का अनुकरण करते हुए भारतीय पुरातत्व के प्रथम महानिदेशक जनरल अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1874-